व्यावसायिक संरचना की दृष्टि से उत्तरी बिहार के छोटे शहर एक अनुशीलन

डॉ0 अभय कुमार

किसी भी देश, राज्य अथवा क्षेत्र के आर्थिक विकास में वहॉ के व्यवसाय का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यवसाय छोटा हो या बड़ा आर्थिक विकास को शुद्रिण बनाये रखने के लिए अतिमहत्वपूर्ण कारक है। किसी भी व्यवसाय को संचालित करने के लिए धन के साथ–साथ जन अतिमहत्वपूर्ण है। जन से तात्पर्य किसी व्यवसाय में कार्यरत आबादी अथवा जनसंख्या से है। यह मूलतः कुल जनसंख्या में प्रतिशत या अनुपात है, इससे दर्शाया जाता है। दूसरे शब्दों में, कुल जनसंख्या में विभिन्न कार्यो में संलग्न जनसंख्या से है। इस प्रकार व्यवसायिक संरचना संसाधनों के उपयोग के लिए उपलब्ध क्रियाशील जनसंख्या की जानकारी प्रस्तुत करती है, विभिन्न कार्यों में संलग्न जनसंख्या को कार्यशील जनसंख्या कहा जाता है।

उत्तर बिहार के नगरो की व्यवसायिक संरचना में काफी विभिन्नता है। कुछ नगर कृष्येत्तर कार्यों पर आश्रित है तो कुछ शहर, शहर होते हुए भी कृषि कार्य में संलग्न है। प्राथमिक कार्यों में क्रियाशील लोगों में कृषक, कृषक मजदूर आदि आते है। यदि किसी नगर में प्राथमिक कार्यों की अधिकता है तो इसका सीधा अर्थ है कि वह शहर कृषक और कृषक मजदूरों से भरा हुआ है इससे नगर के स्तर एवं विकास के मापदण्ड का पता चलता है। श्हर नियोजन एवं नगर विन्यास की सारी अवधारणाएँ वहाँ के निवासियों के जीवन स्तर पर ही निर्भर करती है।